श्री लछमण कला विनोद



स्वर्गीय महाराजा लक्ष्मण सेन जी की
मधुर स्मृति में सादर समर्पित।

—लेखिका

—: प्रस्तावना :—

आज मानव अपने मार्ग से भटक कर अपनी सभ्यता, संस्कृति और आस्तिकता से दूर होता जा रहा है, परिणाम स्वरूप विषय वासना, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार आदि दुर्गुणों से लिप्त होता जा रहा है। मनुष्य के भीतर अपार शक्ति है जिसका अनुभव करके वह जैसा चाहे बन सकता है। मन, वचन और कर्म की पवित्रता से तथा संयम के द्वारा मानव अपने दुर्गुणों पर विजय पा सकता है, क्योंकि शुद्ध हृदय और एकाग्रता से ही ईश्वर के दर्शन सम्भव है।

प्रस्तुत कृति से मेरी चिरकाल की इच्छा पूर्ण हुई है, इसमें कुछ दोष सम्भावित हैं, परन्तु मेरा यह प्रथम प्रयास है। इस कृति के प्रकाशन में मेरे ज्येष्ठ सुपुत्र ललित सेन एवं राज ज्योतिषी श्री कांशी राम जी का सहयोग प्रशंसनीय है।

सुकेत – अगस्त १९७५ —कलावती

स्वामी जी
श्री परम पूज्य [illegible] महाराज
के पवित्र कर कमलों में दंडवत प्रणाम
सहित भेंट स्विकार हो।
हजूर की आज्ञाकारी [illegible] कलावती

★ मुद्रक :—महिन्द्रा प्रिंटिंग प्रैस सुकेत फोन ४०१ ★

श्री गणेशाय नमः श्री गुरवे नमः सरस्वत्यै नमः

श्री लक्ष्मण कला विनोद यूं ही अपने प्रिय सज्जन, बन्धु वमित्रों के लिये इस समय अच्छे विचारों में लिख रही हूँ। जानती तो मैं कुछ भी नहीं, विद्या बुद्धि भी अल्प है, केवल प्रेम पुष्प भेंट कर रही हूँ। उस रमारमण, भवानी शंकर की कृपा से हे प्रभु के भक्तो ! आप अपने अन्त:करण में दृष्टि डालो, तुम्हारे अन्त:करण से प्रीति के झरने किन—2 प्राणि-पदार्थों को ओर वहा करते हैं; इस बात का सावधानी से निश्चय करो। फिर परमात्मा के बिना प्राणि-पदार्थों को ओर तुम्हारे अन्त:करण के जो-2 झरने बड़े वेग के साथ बहते प्रतीत हों, उन झरनों को धीमे चलने वाले करने का प्रयत्न करो तथा परमात्मा सम्बन्धी झरनों को अधिकाधिक वेग वाला करने का सदा प्रयत्न करते रहो। इस बात को भूलना मत।

आप जो कर्म करते हैं, उसके करने से शास्त्रोक्त फल का तुम्हारे अन्त:करण में कितना अनुभव होता है; इस बात को विचारते, देखते रहना चाहिये और उस कर्म में जो सुधार की आवश्यकता हा उसको प्रेम से करते रहो। श्री गीता मे श्रो कृष्ण ने आदेश दिया है

"निज आत्मा के उद्धार से नरक गमन नहीं होय।
आत्मा हि रिपू आपनों आत्मा सो सुख होय॥"

यानि अपने आत्मा को ही मित्र, आत्मा को ही शत्रु जानों, संसार में अन्य कोई भी मित्र शत्रु नहीं।

इसी प्रकार जब हमारा तत्व भी "एक ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" से संल्लीन होता है तो फिर अभेद भाव हो कर ब्रह्ममय हो जाता है तथा भूत भविष्य वर्तमान ज्ञान हस्तामल की तरह होने लगता है। परन्तु इन सबसे प्रथम शरीरस्थ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य इन ६ शत्रुओं को सावधानी पूर्वक भगाने का प्रयत्न करना चाहिये। तभी पूर्ण ब्रह्म का सामिप्य हो सकता है। क्योंकि ये ६ शत्रु किसी प्रकार से रह जायें तो फिरों बड़ी कठिन बात हो जाती है। अत: दुर्दान्न शत्रुओं के प्रभाव से समय—2 पर बड़े 2 देवताओं ने भी अनादर पाया है। तभी तो श्री कृष्ण भगवान कहते हैं कि-

"काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भव:।
महाशनो महापापा: विध्येनमिह वैतिणाम्।
आवृत्त ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्य वैरिणाम्।
कामरूपेण कौन्तेय दश्युरेण नलेन च ॥"

यह रजोगुण से उत्पन्न हुआ अजगर सांप है। कभी—2 यह क्रोध का रूप धारण कर लेता है। इस महापापी के आगे कोई भी आ जाये, उन सबको भक्षण कर लेता है तो भी इसका पेट नहीं भर सकता 1 इसके बराबर शत्रु अन्य कोई नहीं है। यह मन, बुद्धि और सकल इन्द्रियों में घुस कर अपना मोह रूपी जाल फैलाता है और प्राणी के विवेक का नाश कर डालता है। यह शत्रु मनुष्य के हृदय में स्थान पाते समय शास्त्र ज्ञान, आत्मज्ञान, सबका नाश कर डालता है। ६ शत्रुओं के साथ संसार में जीव का संग्राम कोई नई बात नहीं है। मानव जगत में यह युद्ध प्रतिदिन होता ही रहता है। इस समर में जो मनुष्य विजय पाता है, उसका गौरव खूब बनता है। सभी श्रद्धा की दष्टि मे देखते हैं। ऐसे मानव का वस्तुत: मनुष्यत्व है। इन शत्रुओं का विजेता मनुष्य धीरे—2 देवताओं का उच्च पद पा लेता है।

इस समस्त शत्रुओं के विध्वंस करने का उपाय केवल विवेक है। विवेक से ही शत्रु निर्मल हो सकते हैं परन्तु प्राणी मात्र को दुःख

अप्रिय हैं और सुख प्यारा है। अत एव तुम बुद्धिमानों को भी दुःख की निबृति और अखण्ड सुख की इच्छा होनी चाहिये।

हे सुखेच्छु ! जो चीज स्वभाव से ही सर्व दुःख रहित है तथा परमसुख स्वरुप है, उस वस्तु का निसंशय रूप से अनुभव हो जाने पर मनुष्य का मनुष्य को सत्य का ज्ञान हो जाता है, कि मै दुःख रहित परम दशा को प्राप्त हो गया हूँ। ऐसी दशा पाने की प्रकट या अप्रकट ईच्छा होती हैं। अपनी—2 इच्छा पूरी करने हेतु सभी मनुष्य संसार में इस क्षत्र में घुड़ दौड़ लगाये देखे जाते है। परन्तु उन में से बहुत से मनुष्य विवेक की कमी के कारण उस उद्योग करने में भूल करते हैं, इस कारण वे शरीरपात पर्यन्त भी अपनी इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकते। ठीक समझा हुआ प्रयत्न ही इच्छित फल प्राप्त कर सकता है। परन्तु भूल भरे प्रयत्न में इच्छित फल नहीं मिल सकते, यह सत्य स्पष्ट बात जानना चाहिये।

हे देहधारियो ! आप में से जिनको न जाने हुये सत्य अतिन्द्रिय पदार्थो का ज्ञान कराने वाले शास्त्रों के वचनों में यथा परमात्मा के अनन्य भक्तों के और ब्रह्मज्ञानियों के वचनों में विश्वास न हो, केवल अपने अन्तःकरण के विचारों में ही विश्वास हो; उन्हें अपने—2 व्यवहारिक हित साधन के लिये तथा साक्षात् परम्परा से सम्बन्धित लगने वाले अन्य मनुष्यों के हित के लिये नीतिमार्ग में चलना ठीक है। अन्त.करण के खोटे विचारों के अधीन होकर चोरी, हिंसा, ठगी झूठ आदि दोषों के शिकार बनना अच्छा नहीं, किन्तु चोरी न करना, अहिंसा, विश्वस्तता, सच्चाई आदि शुभ गुणों का सेवन करना चाहिये। जेसे विचार तुम दूसरों से पाना चाहते हो, वैसे ही विचार वर्ताव तुम दूसरों से रखो। ऐसा वर्ताव रखो जिससे किसी का कोई भी अहित न हो, सबको सन्तोष देने वाला ही श्रेष्ठ वर्ताव कहलाता है।

इसमें हानि नहीं है बल्कि श्रेष्ठता है। इसको भूलना नहीं चाहिये।काल निरवंधि है। पृथ्वी विपुल है। ज्ञान मर्यादा रहित है। इस बात को हमेशा रखो, तुम अपने ज्ञान के घमण्ड में चकनाचूर होकर दूसरे का तिरस्कार याद न करो। मान्य पुरुषों का सदा सम्मान करते रहो।

सबके साथ नम्रता का व्यवहार रखो, परन्तु किसी विषय को धैर्य व सावधानी के साथ पूरा—2 विचार किये बिना सहसा निर्णय न कर डालो और अपने निर्णय को सत्य मान कर किसी दूसरे की निन्दा न करो। खोटे विचार और दुराचारों में दूर रह कर निष्पक्ष भाव से जहां तक हो सके सत्य पदार्थ की खोज करो। जिस शुभ विचार से और जिस काल से अन्तःकरण को पवित्रता और शान्ति की तरक्की होती रहे, उस शुभ विचार, शुभ कर्म को उत्साह से करते रहो। परन्तु कभी भी शास्त्रविधि का उलंघन नहीं होना चाहिये। अपने अन्तःकरण को पवित्र करने वाले शास्त्रोक्त कर्म, शास्त्रोक्त विधि को पूर्ण रीति से समझ कर उस कर्म का तथा उसके फल का जो सम्बन्ध हो उस सम्बन्ध को असली रूप से जान कर उस कर्म के शास्त्रोक्त फल में पूर्ण विश्वास रखकर अपने अन्तःकरण को उस कर्म में एकाग्र अत्यन्त प्रीति वाला रख कर करो। यदि इस प्रकार करोगे तो अवश्य ही तुम्हारे हृदय की पवित्रता में वृद्धि होगी और परमार्थ के साधन की योग्यता बढ़ जायेगी।

विधि को त्याग कर, कर्म और उसके फल के सम्बन्ध को पूरी तरह से न जान कर, चित्त को एकाग्र किये विना तथा पूरा विश्वास किये बिना प्रीति न रखकर किया गया कर्म फल नहीं देता है। उसके करने में परिश्रम ही पड़ता है। ऐसा करने के बाद धीरे—2 परमेश्वर में अगाध और अटल प्रीति हमारी हो, बस उसी का नाम भक्ति है। भटकते—2 केवल परमेश्वर की मूर्ति को पूजने से वास्तविक भक्ति नहीं, इस बात को कभी मत भूलो।

यदि हम परम दयालु, आनन्द के महासागर, परमात्मा के पास हों तथा वहीं निवास करना हो तो देहाभिमान, सांसारिक तृष्णा को पाद प्रहार से कुचल कर वहां पहुँचो। जब तक हमारे चित्त में देहाभिमान एवं लौकिक अनुराग बना रहेगा, तब तक वहां पहुँच नही सकते, इस बात का सदा स्मरण रहे।

हे सुख के पुजारियो! जब तक आपको धर्म-कर्म का पूर्ण ज्ञान न हो तथा अभिमान की चादर ओढ़कर बैठना भ्रम है। आजीविका के साधन सम्पादन करने मे बहुत सा समय बीत जाता है और अपने व्यापार में जानते हुए कई पापकर्म करने पड़ते हैं। इस कारण हमारा मन ऐसे आवश्यक शुभ कार्य में नहीं लगता है। यदि तुम्हें इस काम को करने की जरूरत ही प्रतीत होती है तो तुम जैसे तैसे समय निकाल कर अच्छे कार्य करने की कोशिश करो। अपने काम धन्धों में लगकर धर्म कर्म का अभ्यास करते-2 पाप छोड़ दो फिर परमेश्वर अवश्य मदद करेगा।

प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है। यदि दुराचरण, दुर्वासना अच्छे मार्ग में न जाने देते हों तो आप सत्संग में रहने लगो। सत्सग के बारे में तुलसी जी कहते हैं कि—

" एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनी आध।
तुलसी संगत साध की, कटे कोटि अपराध।"

सज्जन लोग 'सुन्दर कान्ड' में एक चौपाई पढ़ते होंगे कि जब देवताओं ने श्री हनुमान जी की परीक्षा के लिये राक्षसी भेजी थी, तो उसने हनुमान जी को लंका जाने से रोक दिया था कि मै तुम्हें खा जाऊंगी। तुम जा नहीं सकते तो श्री हनुमान जी ने कहा कि मां मुझे जाने दो। मुझे श्री राम का कार्य करने दो फिर खा लेना। परन्तु वह नहीं मानी। दोनों में

सम्वाद होता रहा। राक्षसी ने मुंह फैलाया और हनुमान ने विशाल रूप से छोटा रूप धारण करके अन्दर घुस कर बाहर निकल आये और एक घूंसा मारा। वह रक्त वमन करती हुई श्री रामदूत श्री हनुमान के चरणों में गिर गई और कहने लगी कि मुझे क्षमा करो। देवताओं ने मुझे परीक्षा को भेजा कि जब तू रामदूत के हाथों से खून का वमन करेगी, तब जान लेना कि राक्षसों का नाश है। मेरे बड़े सौभाग्य हैं जो कि मैने आपके दर्शन पाये।

आदरणीय महापुरुषों की जीवनी पढ़ो। यथा शक्ति दीन दुःखी को दान दो और उनकी सेवा करो तो जिन-2 दुर्व्यस्नों और बाधाओं में फंसे हो छूट जाओगे। सन्मार्ग पर पहुँच जाओगे।

पद्म पुराणों में हरेनाम का महत्त्व

"हरेनाम हरेनाम हि केवलम्, कलौ न सत्यं नासत्यम्"

जैसे हम तुम दुःख की निवृति चाहते हैं ऐसे ही संसार में सधवा विधवायें भी परमानन्द सुख की इच्छा रखती होंगी। इस परमानन्द सुख के लिये हरिभजनानन्द से ही सर्व सुख है। अपने बालक बालिकाओं को भी बालापन से ही पवित्रता, शुभ कर्म, धर्म नीति पालन का स्वभाव रहे।

जैसे सफेद कपड़े पर जो रंग चढ़ जाता है और धुलने पर भी नहीं जाता है उसी प्रकार बड़ी अवस्था में भी वंसे ही रहोगे। यदि सत्य को पाने की बड़ी इच्छा हो तो तुम शरीर के रंग का जरा भी मोह न करो। सत्संग से कुसंग के दोष दूर होंगे। सत्य ज्ञान वोध जहां से भी मिले आदर से ग्रहण करो। जब चित्त पवित्र और शान्त हो जाये तब सत्य के लिये एक केन्द्र निश्चित कर लो।

गोरा हो या काला चमड़ा हो, हरिजन, शुद्र, क्षत्रिय, ब्राह्मण, उनसे सरल, सशास्त्र, सिद्ध, सादा, और बुद्धि समाने वाला सत्य जहां भी मिले, वहीं से उसे ले लो। संसकार से सत्य असत्य जैसे भी सस्कार हो जाना स्वाभाविक है। चन्दन के वृक्ष के पास नीम भी चन्दन हो जाता है।

दोहा—"चन्दन के समीप नीम वह भी चन्दन हो जाये।
नीम बेचारा क्या करे संगत का गुण लग जाये ॥"

अच्छे कर्मों का अच्छा ही फल होता है और बुरे का बुरा ही फल होता है। "जात-पात नहीं पूछे कोई, हरि को भजे सो हरि का होई" जैसे कबीर दास जी जुलाहा थे। भगवान को प्रेम भक्ति प्रिय है।

जैसे सुदामा के पास क्या धन वैभव था? उग्रसेन कंस के पिता का क्या पौरुष था? कुब्जा कुबड़ी कंस की दासी में क्या सुन्दरता थी? युवराज ध्रुव की पांच वर्ष में क्या विद्या थी? केवल सब में प्रेम भक्ति थी। ध्रुव पांच वर्ष में तपस्या में बैठ गया तो भगवान ने स्वयं दर्शन दे कर उत्तम पद प्रदान किया।

इस पर थोड़ी सी भजन कविता है—

किस की शरण में जांऊ अशरण शरण तुम्हीं हो।
द्विज दीन था सुदामा आया तुम्हारे धामा,
धन पति को दे दिलासा निर्धन के धन तुम्हीं हो।
तारा सदन कसाई अजामल गति बनाई,
गणिका सुरपुर पढ़ाई पातक शरण तुम्हीं हो। किसकी..

उद्योग अच्छा करने पर अच्छा ही फल मिलेगा। परिवार की सधवांऐ तथा विधवांऐ भी सभी जीव प्राणी सुख की इच्छा करते हैं। यह भक्ति सूत्र ही भजनानन्द सुख देने वाला है।

धन की तृष्णा, स्त्री या पुरुष की तृष्णा सत्य का यथार्थ ज्ञान नहीं होने देती। इसलिए उन तृष्णाओं को कम करने का अभ्यास विवेक से ही होगा। क्रोध. अविवेक, अभिमान दंभ, भय, शोक, मोह इत्यादि दोषों को भी विवेक से नष्ट करना हैं। जब तक रजो गुण. तमोगुण से मन मलिन रहेगा तब तक सत्य की सच्ची झांकी नहीं होगी।

इसलिए पवित्र प्राणियों का संग मिलता रहे, तभी धीरे—2 मन की पवित्रता और शान्ति बढ़ेगी। यह सब कुछ अपने लिए ही लोक परलोक में सुख तथा मोक्ष देगा। कुछ भी किसी के लिए उपकार नहीं सिर्फ अपने लिए ही सब कुछ है। कुसंग से सदा दूर रहना चाहिए। केवल प्रेम शुद्ध निष्काम भक्ति से ही भगवान मिलते हैं।

व्याधस्य चरणं ध्रुवस्य च तयोर्विद्या गजेन्द्रस्य का,
का जाति विदुरस्य यादव पतेरुग्रस्य किं पौरुषम्।
कुबजाया कमनीय रुपमधिकम् किं सुदाम्नो धनम्,
भुक्त्या तुष्यन्ति केवलं न च गुणं भक्ति प्रियो माधवः॥

और भी एक श्लोक मुझे अपने परम पूज्य जी से प्राप्त हुआ था। उन्होंने मुझे जवानी तथा अमल करने की आज्ञा भी लिखी थी, वह यह है :—

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा तस्य शास्त्र करोति किम्।
लोचनानां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

अर्थ :— गुणवानों की संगत में तीन गुण पैदा होते हैं, यश, कीर्ति, मान, स्वर्ग निवास। मूर्खों की संगत से तीन दोष पृथ्वी पर हैं, अपयश, अर्थनाश धन लुटाना, नरक बुराईयों का होना। जैसे:-अपनी अकल ठीक न हो उसको

शास्त्र क्या कर सकता है । उदाहरण :—नैन हीन को शीशा क्या कर सकता है ।

जिस पदार्थ क्रिया या विचार के सेवन से अपने अन्त:करण में मूढ़ता, व्याकुलता चंचलता तथा क्लेश का अनुभव होता है । उस क्रिया तथा उस पदार्थ से बचने का उद्योग निरन्तर करते रहो ।

गीता में भगवान श्री कृष्ण आदेश करते हैं कि तात्पर्य यह है कि अपनी आत्मा को हो मित्र और अपनी आत्मा को ही शत्रु समझो वैसे संसार में कोई भी शत्रु—मित्र नहीं है ।

सच्चा उद्धार करना चाहते हो तो आपके भीतर आत्मा रुपी ज्ञानदाता गुरु विराज रहा है, उसकी शरण जाइये सत्य सुख का ज्ञान हो जाएगा । इस पर एक छोटी कहानी किसी भक्त ने बनाई है ।

एक ब्राह्मण श्री गौरी शंकर की पूजा करते थे । एक दिन चूहा आया और शिवार्चन की पूजा सामग्री ले गया ब्राह्मण ने समझा चूहा देवता है । उसे पकड़ कर रोज पूजा का भोजन देने लगे, एक दिन बिल्ली आई तो चूहा बिल्ली को देखकर डोरी तोड़कर छूमन्तर हो गया । ब्राह्मण ने समझा बिल्ली बड़ी है और बिल्ली को चौकी पर बिठाकर पूजा करने लगे । एक दिन कुत्ता आया और वह भी उसे देखकर भाग गई, फिर वह कुत्ते को पूजने लगे । एक दिन ब्राह्मण को क्रोध आया और कुत्ते को देखते ही चूल्हे से एक लकड़ी निकाल कर मारी, कुत्ता टैं—2 करता हुआ भाग गया । अब ब्राह्मण ने सोचा मेरी स्त्री बड़ी है, फिर स्त्री को देवता मान पूजा करने लगा एक दिन किसी कारण ब्राह्मण को ब्राह्मणी पर बड़ा क्रोध आया और उसे लाठी से पीटने लगा तब ब्राह्मणी घबड़ा कर पति के चरणों पर पड़कर क्षमा

मांगने लगी। अब ब्राह्मण को ज्ञान हुआ कि सर्वोपरि बड़ा तो मैं हूँ। बस फिर सारे संसार के झंझटों को छोड़कर "अहं ब्रह्म" के चिन्तन में लीन हो गया इसलिए भगवान ने कहा है कि :—

उद्धरेदात्मानात्मानम् ॥
एकेव ब्रह्मा द्वितीयो नास्ति, सर्वं ह्य ब्रमयं जगत् ।

सुख का साथी जगत सब दुःख नाहिं कोय ।
दुःख का साथो साईयां सद्गुरु होय ॥

ॐ नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया जो नाम अधार ।
ॐ तुलसी काया खेत है मनसा भयो किसान
पाप, पुन्य दोय बीज हैं, बोये सो लुणे निदान ॥

(स्वर्ग) स्वर्गस्थितानामिह जीव लोके चत्वारि चिन्हानि वसन्ति गेहे ।
(नरक) अत्यन्त कोपः कटुका च वाणी, दरिद्रता च स्वजने च वैरम् ॥
नीच प्रसंग कुल हीन सेवा, चिन्हानि देहे नरक स्थितानाम् ॥
ब्रह्मानन्द रसं पीत्वा ये तु उन्मत्त योगिनः ।
इन्द्रोऽपि रंक वध्नाति का कथा नृप कीटकः ॥

अर्थः- ब्रह्मानन्द रस पी कर जो योगी उन्मत्त हो जाता है उनके सामने इन्द्र भी रंक तुल्य प्रतीत है। साधारण नृप कीटों की क्या बात है।

शिव, विष्णु, दुर्गा, गणेश, सूर्य यह पांचों देव एक ही हैं। इनसे भेद भाव कराए महांपाप है। शास्त्रों में ऋषियों ने बताया है कि " शिव द्रोही मंम द्रोही" "मंम द्रोही शिव द्रोही"।
भगवान जी का वाक्य है :—

(भजन में भगवान का सन्देश) भक्तो क्यों अधीर हो देखो मै आ रहा हूँ सन्ताप सब तुम्हारे सन्तो मिटा रहा हूँ। माया को दूर करके सुनिये तो कान धरकर यमुना के तट पर अब भी बंशी बजा रहा हूँ। आंखों के सामने हूँ जो चाहे मुझ को देखे विराट रुप अपना हर दम दिखा रहा हैं। अमृत का पात्र भर के जी चाहे जिसे पी ले, गीता का ज्ञान सागर निशदिन बहा रहा हूँ।

"एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसी दास ।।
देनहार कोई और है, भेजत भेजत है दिन रैन।
लोग भ्रम मुझ पर करे इस ते नीचे नैन ।।

अर्थ: भक्त रहिम बड़े दाता थे। देते समय नजर नीचे करते थे। किसी ने पूछा, नीचे नजर क्यों रखते हो तो रहीम जी ने कहा कि देने वाला कोई और हैं, लोग मेरा भ्रम करते हैं तब नीचे देखता हूँ। सत्य है, वही जगत को देता है।

दिन-दिन सुन कर नाद ध्वनि को हो मन गल तान।
ब्रह्म जोत घट में बिसरे काया भान ।।

दूरदर्शी पुरषों या स्त्रियों को अपमान से अमृतपान की तरह तृप्त होना चाहिये। सम्मान को विष की तरह समझना चाहिये, इसका शास्त्र का श्लोक भी **"लोक परलोक सुधार"** नामकपुस्तक के १२८ पृष्ठ में कृपया देखें।

"अपमाना तपो वृद्धि सन्माना च तप क्षय: ।"

इस पर एक कहानी भी है।

कांरु और नौशेखा दो बादशाह हुये। इन में से कांरु मशहूर है लोगों

को दु:ख देकर धन इकट्ठा करने में और नौशेख मशहूर है इन्साफ, सच्चाई, सादगी और ईश्वर भजन में। उनकी बेगम प्रत्येक दिन नमाज कीतैयारी के लिये कुयें से आला धागे की रस्सी से पानी का लोटा निकाललती थी। परन्तु एक समय सांसातिक स्त्रियों ने आकर उसको कहा कि बेगम ! बादशाह का तुझ में कोई भी प्यार, आदर नहीं, तेरे पास न कपड़े हैं, न जेवर हैं। तुझको भिखारिन क्यों न कहा जाये। इस पर बेगम को लालच आ गया और बादशाह से कपड़े और जेबर मांगे। तब बादशाह ने कहा कि तू लालची हो गई है पीछे से पछतायेगी और जेबर लाकर दे दिए। दूसरे दिन जब वह पानी लेने गई तो आला धागा टूट कर लोटा पानी में गिर गया। बहां से आकर रानी ने सारा वृतान्त बादशाह को सुनाया। बादशाह ने कहा, "अगर तू सांसारिक सुख चाहती है तो जेवर आदि से सन्तोष रख। यदि खुदा से प्रेम है तो अपने मन को लालच में न फंसा। उसने आज्ञा का पालन किया और दूसरे दिन आला धागे से पूर्ववत लोटा भर कर ले आई।

हमारे पांडव सेन वंश में भी सुकेत निवासी महाराजा मदन सैन हुये जो रियासत के खजाने का रुपया प्रजा की भलाई के लिये खर्च करते थे। अपना और अपनी रानियों का खर्च घराट की आमदनी से करते थे। धन्य है ऐसे परमार्थ जीवन को।

बुरा-बुरा सब को कहे बुरा न देखो कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय ।।
जो तेरे लिये बोये कांटा उसके लिये तू बोये फूल।
वो फूल तेरे फले फूल के फूल, उनके लिये त्रिशूल ।।
सुख के माथे सिल पड़े, जो नाम जपन ते जाये।
बलिहारी तेरे दु:ख की बार-बार नाम जपाये ।।
तुलसी जो उत्तम प्रकृति, क्या कर सके कुसंग।

चन्दन विष व्यापक नहीं, जो लटकत भुजङ्ग ।।
ढूंढत-ढूंढत जग फिरा कहीं न मिला राम।
राम जब ढूंढा मन के पाया, तिल के ओटे राम ।।
मगस बन के गिर पड़ना बुरा होता है महिमा का।
बहुत कुछ नजारा देख चुका सुवल का रिहा का ।।
तुझे एक शाहे आलिशान की पेशी में जाना है।
हमेशा के लिये माना उसी का आस्ताना है ।।
उसी सरकार से मिलता सभी को आवोदाना है।
उसी सरकार का मुहताज हर फरदे जमाना है।

सुवर्ण का वाक्य :—आग में गर्म करने पर भी मुझे दु:ख नहीं हथौड़े से भी दु:ख नहीं होता है, दु:ख इस बात का है कि तोला जाता हूं रत्ती से।

राम नाम मिसरी पियो दूर जाहि सब रोग, सुन्दर औषध सब जप तप साधन योग। साधु संग में सुख बड़ो जो कर जाने कोए आधा दिन सत संग को कल मरत डारे खोय।

(गोवर्धन)

देख उड़ती उमंग मन गोवर्धन को देखा।
गोवर्धन धरेया के ध्यान से भूल जात देहभान ।।

ज्ञान-2 गुदड़ी को चीर घाट देखकर चीर चुरिया मोहन की।
सेवा कुंज देख सुधि होत श्याम सुन्दर की ।।

वंशी बट देख-2 स्मृति होत वंशी बजैया की
यमुना हिलोर देख हिलता हृदया कालिदह देख याद आती कन्हैया की ।।

श्लोक—मत्त् निन्दा यदि जन परितोषयति, न च प्रयत्न सुलभोदय मनुग्रहोमे ।
प्रेयेषिनोऽपि पुरुषा परितुष्ट हेतो दुखार्दजितान्यपि धनानि परित्यजन्ति ।।

यदि मेरी निन्दा से लोग प्रसन्न हैं तो यह भी उनकी कृपा हैं क्योंकि कल्याण चाहने वाले कभी दु:ख से नहीं घबराते । सुख दूसरों के लिये छोड़ देते हैं ।

(भजन श्री राम—सीता सम्वाद)

सीता मान कहा मन चल साथ री,
अमृत भोचन छोड़ क्यों जाये वनफल खाओ री,
धूप जो पड़त धरती जो तपत पसीना पड़त मोरे गात री,
भूमि दे ऊपर सेज बिछाओ किस विध री सोना ।
सीता मान······
नदिया गहरी बेड़ी पुरानी किस विध लंघना पार,
सीता न माने प्रभु मै तो चलूंगी साथ,
सब सुख मोहे इन चरणों में मै तो चलूंगी साथ रे,
राम लक्ष्मण सीता देवी वन को सधारे धनुष-बाण लियो हाथ,
सीता कहे अब मै थक गई धीरे चलो दीनानाथ जी,
राम कहे सीता न चल मेरे साथ री ।

(भजन)

मीराबाई कहे हे प्राणपति मै सदा रहूँगी तुमरे साथ,
बृन्दावन में गिरिधर गोबिन्द वही लेगें खबरिया री ।
मीरा कहे······

(श्री भगवान जी के उपदेश)

1. जो भी शक्ल तुम्हें सबसे प्यारी लगती है उसका ध्यान करो। आंखें बन्द करके आंखें खोल कर, यहां तक कि वही शक्ल हर वक्त नजर आये। सारे संसार में उसी शक्ल को देखो। मेरी कोई एक शक्ल नहीं है जिसका ध्यान बताऊं।

2. कोई भी विधि मेरी पूजा नहीं है। सच्चे दिल से जो किया जाये वह सब ही ठीक है। दीन दुखियों की सेवा करना ही मेरी सबसे अच्छी पूजा है। मन में ही सदा गुप्त पूजा करो जिससे दिखावट नाम मात्र की भी न हो।

3. मै सब का मालिक हूँ। सारे जगत का मजहब, वेद, जबानें, सब देश, जो कुछ भी है वह सब मेरा ही है। इसलिये सब को प्रेम से देखो।

4. सब को एक सा जानों, किसी को दु:ख न दो, अहिंसा व्रत का पालन करो।

5. एक पिता को ही सन्तान है। सभी को भाई बहन जानों। ऊंच-नीच का विचार छोड़ दो।

6. जो अच्छा काम करे वही ऊंचा है और बुरा काम करे वही नीच है।

7. नीच से सदा परहेज करो।

8. मेरा भक्त चाहे जाति से चाहे नीच हो मगर उसे उच्च मानों।

10. शान्ति रखो। शान्ति में ही परमेश्वर है।

11. गुस्सा, ईर्ष्या, चोरी, बेइमानी, कभी भी किसी भी हालत में न करो।

12. दान हमेशा गरीब को दो, चाहे किसी भी जाति का हो और सदा गुप्त दान दो। कोई दिखावा मत करो।

13. जो काम खुद कर सकते हो उसे किसी से मत करवाओ।

14. अपने को हमेशा गरीब समझो।

15. सदा सब की सेवा करने को तैयार रहो।

16. जो भी काम करो पहले भगवान का नाम ले लो।

17. सब काम भगवान के अर्पण करो।

18. अभिमान, आलस्य, वैर, और हठ कभी न करो।

19. यह कहना गलत है कि सब कुछ भगवान ही करता है। मानव को शक्ति है, खुद अच्छे बुरे कर्म करता है। इसलिये तन-मन से अच्छे कर्म करते जाओ।

20. दुःख और सुख को एक समान समझो।

21. जहां लड़ाई-झगड़ा, कलह होती है वहां कभी भला नहीं होता बल्कि तबाही होती है।

22. मेहमान का सदा आदर करो, चाहे वो कोई भी हो।

23. बच्चों को क्षमा करो, बड़ों की सेवा करो।

24. सब को सुख देना ही भगवान की भक्ति है दूसरे को बुरा देखना पाप है।

25. भगवान तीर्थ, मन्दिर, पूजा में नहीं है। वह तो प्रेम, सत्य और भक्ति में है।

26. भगवान एक ही है। देवी, देवता सब उसके ही रूप हैं। इसलिये एक ही भगवान की भक्ति करो।

27. हर मजहब का आदर करो।

28. अपने रसम-रिवाजों के साथ—2 दुनियां के रसम रिवाजों का भी आदर करो।

29. जब मन पूर्ण रुप से प्रभु में लग जाए तब मन जो कहे वही करते जाओ, मन कभी बुरे रास्तों पर नहीं ले जाएगा।

30. सदा निष्काम बुद्धि से काम करते रहो, जो काम अपने लिए किए जाये वही बाधक होते हैं।

31. किसी से कुछ न मांगो, यहां तक कि प्रभु से भी कुछ न मांगो।

॥ ओऽम् ॥

(भजन)

इस जीवन में जी भर के देखा,
आराम तो है पर चैन नहीं।

1. ईश्वर ने धन-मान दिया, घर-बार, रोटी-दाल दिया।
इस माया के फन्दे में डाल दिया आराम……

2. पितु-मातु, कुटुम्ब, भी है घर में सुन्दर नार भी है।
इन सबका मुझ पर प्यार भी है आराम……

3. हाथी, घोड़े सामान भी है, सुन्दर महल मकान भी है।
शुभ कर्मों में मेरा ध्यान भी है आराम……

4. स्त्री रत रंग किया ऐश अशरत ढ़ंग किए ।
सत पुरुषों का सतसंग किया आराम.....

(कव्वाली)

तसवीर एक किसी की और नाम एक किसी का ।
सरमाया बस वही है अब मेरी जिन्दगी का ॥

1. इनकारे बंसल क्या खौफ हक नहीं ।
काबे में गिराना दिल तोड़ना किसी का ॥

2. यह कौन सा सितारा है जो छूटा है ।
आसमां से ऐ दोस्त देखना, आंसू न हो किसी का ॥

3. दागे फराग मैंने कुछ इसलिए खाए ।
मध्यम सा हो रहा है, आईना जिन्दगी का ॥
किस पर करें भरोसा ।
कोई नहीं इस जहां में किसी का ॥

दोहा :— राज्य संग न जायेगा, पाप पुण्य ही जाये ।
विपुल धन काम न आये, आये मुट्ठी बांधी हाथ पसारे जाए ॥

दोहा :— पुण्य करे सुख पायेगा, पाप करे पछतायेगा ।
अच्छे मनुष्य विपति में भी धीरज रखते हैं, सुख में शांत रहते हैं ।

इन्द्रियों से वस्तु का ज्ञान होता है ।
जैसे :— आंख. कान, जीभ त्वचा । ईश्वर सर्व व्यापी है ।
असम्भव को सम्भव करता है ॥

जसे :— ऊसर धरती में बीज बोने से, बांझ तरु को सींचने से ।
कृतघ्न के साथ भलाई करने से अच्छा ही फल होता है ।।

ऐसा कार्य न करो जिससे पीछे से पछताना पड़े ।।

ओछे नर की प्रीति वालू की भांति थोड़े समय की होती है ।

ओसर बीता जाए अपने मन पछताए ।
श्रम गवांए वृथा ही समय बीता जाये ।।

खल मनुष्य और सांप दोनों ही क्रुर होते हैं ।

घने बाज गजराज सुख के सेन समभ ।
वन-ठन के ही काज है जिन हेतु व्रजराम ।।

दोहा :— पड़े सोते हो गफलत में जरा भी आंख को खोलो ।
हुई अब शाम उठ बैठो मुसाफिर घर को जाना है ।।

ना दौलत काम आएगी, ना दुनियां से कुछ हासिल किया ।
अगर तुम सोच कर देखो, ये सब कुछ छोड़ जाना है ।।

अगर मुक्ति कि चाहत है तो छोड़ो सब गुनाहों को ।
कहे भक्ति प्रभु सिमरो, वही सच्चा ठिकाना है ।।

दोहा :— भौरा, भूंड़ एक है, एक ही उनकी गूंज ।
राह पड़े सो जानिए कौन भौरा कौन भूंड़ ।।

राम नाम जपते रहो जब तक तन में प्राण ।
कभी तो दीन-दयाल के धुन पड़ेगी कान ।।

अफसोस दिन गरदश के हमारे आ रहे हैं ।
कोई नहीं हमारा हम सबको चाह रहे हैं ॥
परवाह नहीं अगर ये जमाना खिलाफ हो ।
रास्ता वही चलेंगे जो सीधा व साफ हो ॥

दोहा :— इसमें नहीं किसी का कसूर,
किस की ताकत ।
गरुर से रोके उसके अटल हुक्म को ॥

(शास्त्र का श्लोक)

विपति धैर्यमथाभ्युदयोक्ष्मा सदसी,
वाक पटुता युधि विक्रमं यशशी चाभ्यरु ।
व्यसनं सुतो प्रकृति सिद्धं भीहेहिमहात्मानाम् ॥

अर्थ :— दुःख में धैर्य रखना, अगर कोई माफी मांगे तो उसे मांफ कर देना चाहिए ।

मजलिस में अक्ल तथा सोच-बिचार से बातें करनी चाहिए, मैदान में बहादुरी दिखाना, बड़ा आदमी बनने पर गरुर न करना, हर वक्त एक जैसे रहना, ये बातें सज्जन लोगों में पाई जाती हैं ।

जिस वक्त इन्सान को मुसीबत पड़ जाए तो, उसे सब्र करना चाहिए । क्योंकि धीरज के बिना काम नही चल सकता । ऐसे समय पर घबराना नहीं बल्कि दिलेर और होश्यार बन कर काम करना चाहिए ।

शत्रु से भी नहीं डरना चाहिए । जो पैदा हुआ है वह मित्र, शत्रु तो होगा ही किसी कवि ने कहा है कि :—

जिसके दस शत्रु नहीं, मित्र नहीं पचास ।
ओ जननी तू क्यों जनो वृथा मरी भार दस मास ॥

(रावण नीति)

अच्छा काम तभी करना चाहिए बुरा सोच के पोछे । श्री राम ने लक्ष्मण को रावण के पास मरते समय भेजा कि नीति सीखो, रावण वड़ा विद्वान है, क्योंकि वह सर्व विद्या निधान है ।

श्री लक्ष्मण सिर के पास खड़े हुए मगर रावण चुप रहा । लक्ष्मण जी श्री राम जी के पास आए और बोले वह तो बालता नहीं है । श्री राम जी ने पूछा कहां खड़े हुए थे ? तो लक्ष्मण ने कहा सिर की तरफ फिर श्री राम ने कहा गुण, शिक्षा सीखने के लिए पैरों की तरफ खड़े होना चाहिए । फिर श्री लक्ष्मण पैरों की तरफ खड़े हो गए । तब रावण ने कहा जो काम अच्छा है उसे जल्दी करो बुरे को ठहर के करो, क्योंकि समुद्र को बन्द करना और स्वर्ग को पौड़ी लगाना यह दो काम अच्छे थे पर मैंने सीता हरण पहले किया सो यह गति हुई अच्छा कार्य रह गया । इस पर कवि ने कहा है :—

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
समय बीता जाये है, फिर करेगा कब ॥

दोहा :— कागा काको धन हरे, कोयल काको देय ।
मोठा बचन सुनाए के, जग अपनो करी लेय ॥

दोहा :— अब वो बातें रही, न वह रातें रही ।
सिर्फ यादगार बा की रहीं ।।
काम भगत के वश में पड़ता नहीं ।
वह खुद ही देता है उससे मांगना पड़ता नहीं ।।
चन्दन के धोरे नीम बसे वह भी चन्दन हो जाये ।
नीम बेचारा क्या करे संगत का गुण लग जाए ।।

(संसार वृक्ष की तरह है ।)

पात कहत है वृक्ष सो अब के बिछड़े कब मिले ।
जा दूर—2 पड़ जाए ।।
वृक्ष कहे पात को तुम सरीखे पावने ।
कई आत कई जात ।।

(राम भजन सार)

दोहा :— प्यारे सज्जनो राम भजन करते जाओ ।
सदा कोई न रहा, न रहेगा उठ जाओ ।।
शरण प्रभु की पड़कर मुक्ति पाओ,
यही पार उतरने की नाव ।
तुमतो अपना जीवन सफल बनाओ ।।
सदा किसी की न रही बहार ।
भवसागर में वह जात है संसार ।।
बेल वधे समे वृक्ष से वृक्ष से प्रीत टूटे ।
पर झूठे ये ही, सज्जन बड़ों की नीति ।।

(कुसंग का प्रभाव)

बसे कुसंगत चाहे कुशल ये ही बड़ा है खेद ।
दुःख महिमा घटी समुद्र की रावण से पड़ोस ।

(विभीषण वाणी)

कुमति, सुमति सबके उर माहीं।
जहां सुमति वहां सम्पति नाना, जहां कुमति वहां विपति निदाना ॥
रे मीत ! घबराओ मत गो तुझे रंज की बात है।
फिर वही दिन आयेगा दो चार दिन की बात है ॥

(समय की कद्र होनी चाहिये)

हर दम दौर दिखाता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।
मूर्ख की कृपा बुरी भोज चतुर को वास।
ज्यों-ज्यों सूरज गर्मी तभी बरसन की आस ॥

(धर्म की शक्ति बलवान)

आपत्ति कितनी भी आये दुःख का मारा हुआ हो।
यदि प्रेम से धर्म करो जरूर बेड़ा पार हो।
दुःख से बचने का धर्म हो औषधि है।
धर्मवान का ही जग में बोलबाला है ॥

(ईश्वर से दुआ)

अब सलम करना कर्म मुझ दीन बलहीन पर।
अब मस्ता दास तेरा ऐ सनम महताब सुन ॥
छा रही है दुख की घटा इक दीन व हीन पर।
नाज था सभी का जिस पर लुट गया।
गम बहुत लुटने का है अब दीन इक बलहीन पर ॥
एक कर्म बलहीन तेरा दास, स्वामी हो गया।
कर कर्म प्रभु धर्म जिससे बच सके संसार में ॥

कहावत गैर मुमकिन है कि लोहे से भी गर्मी निकले।
जिस तरह बर्फ से दुनियां में गर्मी निकले।।
कविता दूर होंगे सब दुख उस हरि की दया की धार से।
आनन्द होगा राम तेरी दया की धार से।।
आजमाईश अपनी किस्मत की कर ले वहां जाकर।
मुमकिन है कि दुख तेरा ला दे सुख की शक्ल में बदल कर।।

(मेरे मनमोहन घनश्याम) विनय

मोहताज अब इस हाथ की दासी तुम्हारी हो गई।
अब स्वामी प्रेम से सेवक तुम्हारी हो गई।।
प्रेम मन्दिर में तेरे अब तो योगन बन के जाऊंगी।
भस्म प्रेम की रमा कर प्यारे मोहन वह लायेगी।।
बादशाही मुझको होगी एक तेरी जान पर।
आनन्द सब सन्तोष होगा प्रेम ही के मान पर।।
फक्त एक ईश्वर है राजा सो सब राजाओं का राजा है।
इस सृष्टि का कर्ता बड़ी जिसकी मर्यादा हैं।।
बिना जिसके हुक्म हरगिज नहीं निकलते हैं।
बिन उसके न ही अन्न धन उपजते हैं।।
नहीं दरकार ईश्वर को तेरी माला फिराने से।
नहीं प्रसन्न रहते हैं फक्त चन्दन लगाने से
अगर अभिमान है तुझको मिले भगवान।
आकर जपो जगदीश को प्यारे धरो दिल में बड़े प्रेम से।।
बहुत कम हैं जीव ऐसे जो धर्म पर तन लुटाते हैं।
बहुत हैं जीव ऐसे जो धर्म पर सिर कटाते हैं।।

कहीं तो नर भी ऐसे जो कर्म से सुख को पाते हैं ।
नहीं है जिन्दगी अच्छी जो दु:ख से दिन बिताते हैं ॥
अलख ईश्वर की महिमा कर्म उसका निराला है ।
वही दुष्टों का है घातक जिसे दशरथ ने पाला है ॥
उसी ने रुप धर नर का बहुत भक्तों को तारा है ।
पुन: लका में जाकर बुरे रावण को मारा है ।
नहीं हमें अभिमान लाजम है धन पर फक्त न कर ।
तथ्य को पालो भरोसा करके ईश्वर का सुख उसी विधाता का है ।
दु:ख है उसी विधाता का आनन्द सुख है ॥
है राम देश का तुम्हारे हाथों में ।

भजन

अवध के प्यारे मेरे सहारे मेरे धर्म को निभाने वाले ।
पड़ी है हम पर बिपति भारी, विपती को हटाने वाले ॥
तुम्हीं अल्ला, तुम्हीं ईसा, तुम्हीं परमेश्वर ।
सुखों में अगर सिमरन करे तो दु:ख काहे को होवे ॥
अगर हुई हरि कृपा तो दु:ख को दूर भगायेगा ।

दोहा :—दु:ख में चिल्लाने से सब नर तरस खाते हैं ।
नर की क्या बात ईश्वर भी दया लाते हैं ॥

नहीं परवाह मुझको अगर तेरी भलाई हो,
सहूँगी दु:ख भारी कितना अगर तेरी भलाई हो ।
धर्म पर मन लगांऊगी ये ही हैं मेरा संगी इसी में मन लगांऊगी ॥

अगर गये दुनियां से जो धर्मी ।
मगर उनका नाम जीता है जैसे देवी सीता हैं ॥

भजन प्रार्थना

गोवर्धन गोपाल बैकुण्ठ ना सुख के गोपाल ।
गिरधारी रक्षक मेरा और नहीं है हितकारी ।।
कृपा की दृष्टि से अब तू उवार ले मुझे ।
खुशामद ही दुनियां में है प्यारी ।।
सब गये सब जायेंगे एक दिन तो जाना है ।
जरुर लब छूटे छूट जायेंगे एक दिन छूटता तो जरुर है ।।
काल समय का डंका रहेगा यूं अचल ।
जिस तरह भगवान की महिमा गाना है जरुर ।।
क्या वह पुष्प सुन्दर पुष्प खिल—2 कर मुरझायेगा ।
इस तरह सब जोवों को मुरझाना है जरुर ।।
आराम, राहत, धन व दौलत सभी यहीं रह जायेगा ।
सब यही कहे उनका यहीं रहना है जरुर ।।
राम अब लाजिम तुम्हें सुमरन करो भगवान का ।
खाली आना जग से खाली जाना है जरुर ।।
नहीं एक सा दिन रहता किसी नर का जमाने में ।
कभी सुख है कभी दुःख है सभी नर को जमाने मे ।।
जो थे निर्धन कहाते धनी सब हो हो गए ।
इस जमाने में धरो विश्वास ईश्वर पर बड़ा जो है जमाने में ।।

दोहा :—सुखे पेड़ को जितना भी जल दो वह सुखे का सुखा ही रहेगा ।
अज्ञानी को कितना ही ज्ञान दो पर वह अज्ञानी हो रहेगा ।।

सूखे, रुखे जग में निशदिन रुखा और सूखा है ।
दरिद्रों के अन्न, धन कितना ही हो पर वह भूखे भूखा ही हैं ।।

दोहा:— जब किस्मत सोती होय माया को संसार में जीत सका न कोय।
जीत लिया जिसने प्रभु धन्य वह नर होय ॥

(गाना)

कर्म से धर्म से प्रेम से आनन्द रहित यह धाम है।
क्या किसी ने सुख को पाया जब विधाता वाम हैं।
तकदीर की बातें न मिटनी कभी तदबीर से,
आनन्द, सुख, धन, धाम का इक कर्म ही परिधान है।
अब मेरी आशा वृथा इस संसार में पखार से त्याग ही वैराग्य आनन्द है।
दोनों लोकों में रख कर सहारा राम का हर घड़ी।
रक्षक मेरा केवल प्रभु का ध्यान है।

(भजन)

जाऊंगी-2 वन को प्रभु जी सिमरूंगी श्री राम को त्यागुंगी मात-पिता सुख धाम को।

बन्धु तजे थे विभीषण राजा प्रह्लाद पिता के मान को।
धम है प्यारा सबसे पिता जी और वृथा संसार है।
प्रेमशक्ति बल अपना दिखलाती है पति की पूजा नारियों शृंगार है।
पति ही सुख का सार है।, पति सुख नहीं तो सब बेकार है,
जैसे नेत्र बिना सूना संसार है।

(भजन)

किस तरह साधन हम इस मंजिल से हंसते जायेंगे।
दो मुसाफिर तेरे दर्शन को तरसते जायेंगे।
बस चुके भाई के घर में कृष्ण जी बस आप।

तो हम मुसाफिर किस तरह संसार सागर से पार जायेंगे ।

(भजन)

जै कृष्ण चन्द्र महाराज गोपाल हरि बृजराज ।
मुरलीधर मोर मुकुट धारी श्री पति गिरधारी ।
अवतार देवकी कोख लियो जा जसुमत के घर वास लियो ।
इच्छा वर सबको आप दियो बहु कीने कौतिक भारी ।
संसारी निज भक्त कृपा कर तारे ।
खल दुष्ट असुर संहारे किये काज सकल न्यारे-2 तुमने ।
महिमा भक्तों की भारी कभी वृद्ध, तरुण, बाल, बने ।
कभी चोर कभी महिपाल बने, क्या कहूँ क्या ही कृपाल बने ।
सब हो अद्भुत माया विस्तारी, रखे हम श्याम से काम ।।

दोहा:— जान दी उसी की थी हक तो ये है कि
हक ही अदा न हुआ ।

:गाना:—

सुखी स्वाधीन हम भी थे जिसे हम याद करते हैं ।
बुझे दिल को नये फिर हौंसले आबाद करते हैं ।
किसी उम्मीद पर जी कर दुःखों की मार सहते हैं ।
....में जिन्दगी बरबाद करते हैं ।।
छिड़कते हो नमक क्यों जुल्म की फरियाद करते हो ।
हटा लो जाल बुलबुल से चमन में मौज करते हैं ।

(शायरी)

खफा से मुँह न मोड़ेंगे सता ले जिसका जी चाहे ।

वफादारी में हमको आजमा ले जिसका जी चाहे ।।
मैं दिल को हाथ में लेकर हसीनों से कहता हूँ ।
ये तोता बोलता लाया हूँ पाले जिसका जी चाहे ।।
मेरे काबू में आकर मजे में मजे कहते हैं हंसा ले जिसका जी चाहे ।
रुला ले जिसका जी चाहे ।।

कविता

हमें न चाहिए दिल दुखाना किसी का ।
न रहेगा यह जमाना किसी का ।।
बुलायेगा दोस्त तो लगाना पड़ेगा सवाना किसी का ।
जब बुलायेगा खुदा तो जाना पड़ेगा ।।
नहीं मिल सकता सवाना किसी का ।
मिलेगा यही जो लिखा है मुकदर में ।।
नहीं मिल सकता खजाना किसी का ।

दोहा :— जहां लोभ वहां पाप है, क्रोध जहां तहां काल ।
जहां क्षमा तहां भगवान ।।

—: गजल :—

ह हो किस तरह आंख का तसवर बड़ जाता हैं ।
आईना देखता हूँ तो तेरा ही मुंह नजर आता है ।।
मेरी जां इसलिए तुमको खफा करता हूँ कि ।
तुम्हारे मनाने में मजा आता है ।।
दर्द उठता है, पर उफ करते डरते हैं ।
घबरा के मुंह से तेरा नाम निकल जाता है ।।

तो हम मुसाफिर किस तरह संसार सागर से पार जायेंगे ।

(भजन)

जै कृष्ण चन्द्र महाराज गोपाल हरि बृजराज ।
मुरलीधर मोर मुकुट धारी श्री पति गिरधारी ।
अवतार देवकी कोख लियो जा जसुमत के घर वास लियो ।
इच्छा वर सबको आप दियो बहु कीने कौतिक भारी ।
संसारी निज भक्त कृपा कर तारे ।
खल दुष्ट असुर संहारे किये काज सकल न्यारे-2 तुमने ।
महिमा भक्तों की भारी कभी वृद्ध, तरुण, बाल, बने ।
कभी चोर कभी महिपाल बने, क्या कहूँ क्या ही कृपाल बने ।
सब हो अद्भुत माया विस्तारी, रखे हम श्याम से काम ।।

दोहा:— जान दी उसी की थी हक तो ये है कि
हक ही अदा न हुआ ।

:राग:—

सुखी स्वाधीन हम भी थे जिसे हम याद करते हैं ।
बुझे दिल को नये फिर हौंसले आबाद करते हैं ।
किसी उम्मीद पर जी कर दुःखों की मार सहते हैं ।
....में जिन्दगी बरबाद करते हैं ।।
छिड़कते हो नमक क्यों जुल्म की फरियाद करते हो ।
हटा लो जाल बुलबुल से चमन में मौज करते हैं ।

(शायरी)

खफा से मुँह न मोड़ेंगे सता ले जिसका जी चाहे ।

वफादारी में हमको आजमा ले जिसका जी चाहे ।।
मैं दिल को हाथ में लेकर हसीनों से कहता हूँ ।
ये तोता बोलता लाया हूँ पाले जिसका जी चाहे ।।
मेरे काबू में आकर मजे में मजे कहते हैं हंसा ले जिसका जी चाहे ।
रुला ले जिसका जी चाहे ।।

कविता

हमें न चाहिए दिल दुखाना किसी का ।
न रहेगा यह जमाना किसी का ।।
बुलायेगा दोस्त तो लगाना पड़ेगा सवाना किसी का ।
जब बुलायेगा खुदा तो जाना पड़ेगा ।।
नहीं मिल सकता सवाना किसी का ।
मिलेगा यही जो लिखा है मुकदर में ।।
नहीं मिल सकता खजाना किसी का ।

दोहा :— जहां लोभ तहां पाप है, क्रोध जहां तहां काल ।
जहां क्षमा तहां भगवान ।।

—: गजल :—

ह हो किस तरह आंख का तसवर बड़ जाता हैं ।
आईना देखता हूँ तो तेरा ही मुंह नजर आता है ।।
मेरी जां इसलिए तुमको खफा करता हूँ कि ।
तुम्हारे मनाने में मजा आता है ।।
दर्द उठता है, पर उफ करते डरते हैं ।
घवरा के मुंह से तेरा नाम निकल जाता है ।।

बेकरारी से रोना हमारे है ।
ऐ जान अरे तेरी तस्वीर कलेजे में लगी रहती है ।।
तेरी तस्वीर में तुझ से भी एक निराली खूबी है ।
जो लिपट ले जितना जी चाहे ।।
ना घुरकी है ना गाली है ।
तेरी तस्वीर कलेजे पे लगी रहती है ।।
तेरी आंखों का तसवर रोने नहीं देता ।
इसलिए आंखें तर रहती हैं, दर्द रहता है ।।

भजन

आओ कृष्ण मुरारी जी हम तुम पे बलिहारी जी ।
प्यारा—2 यौवन तेरा जाने हम व लहारी ।।
मद भरा यौवन मदन मुरारी माधुरी मुरत ।
बसे जिया में सुध विसारी जी, अब तुम पे बारी जी ....
तीन लोक में रुप तुम्हारा लीला है सब न्यारी ।
जं कारन अधम उधारन दीनन स्वामी ।।
कष्ट निवारन गावे सब नर नारी जी ।
आओ कृष्ण मुरारी जी........

तुलसी तोड़ने का मन्त्र

1. तुलसीमृतनामासि सदा त्वं केशव प्रिय ।
केशवार्थमचोनोमिता वरदाभव शोभने ।।

2. गोविन्द वल्लभा देवी भक्त चैतन्य कारिणी ।
स्नानपामि जगत् धातृ विष्णो भक्ति प्रदायिनीम् ।।

3. श्री वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
विष्णे भक्ति प्रदे देवो सत्य वत्ये नमो नमः ।।

दोहा :— कार्य धीरे करे मनुष्य ना होवे अधीर ।
समय पाय तरुवर तेर सींचत जाओ नीर ।।

आलस्य, अभिमान को त्याग कर अपने ध्येय पर दृढ़ विश्वास रख कर अवश्य सफलता होती है मनुष्य कार्य में उद्धम करे भगवान सफलता देता है।

कविता

ये प्यारे सज्जनो राम भजन करते जाओ ।
सदा किसी की ना रहेगी उठ जाओ ।
संसार यही है पार उतरने की नाव ।
तुम तो अपने जीवन को सफल बनाओ ।।

दोहा :— सदा न जीवे मां-पे सदा न हुश्न जवानी ।
सदा ना सोहबत यारा इक सदा हरि प्यारा ।।

परलोक तत्व में लिखा है कर्मानुसार पितृ लोक में नरक कर्म वाला नरक जाता है, स्वर्ग भोग करने वाला स्वर्ग जाता है । वायु तत्व ही भोगता है चार तत्व छोड़ जाता है ।

स्त्री का महत्व

जिस घर में पतिव्रता सती साध्वी होती है वहां चारों पदार्थ धन, ऐश्वर्य, सुख, सम्पति भक्ति ज्ञान सदा वास करते हैं।

पहले जमाने में देवी सीता, सावित्री. पार्वती आदि हुई हैं। भगवान करे इस युग में भी ऐसी ही सती अनुसूया जैसी जिन्होंने सत से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को एक दम बच्चे बना दिया। एक नेक औरत घर की रोशनी और दौलत होती है।

—: गजल :—

न मैं किसी की आंख का नूर हूँ।
न किसी के दिल का करार हूँ॥
जो किसी के काम ना आ सके।
मैं वही मुशते खवार हूँ॥
न मैं किसी का रकीब हूँ।
न तो मै किसी का हबीब हूँ॥
जो बिगड़ गया वह वह नसीब हूँ।
जो बिगड़ गया वह दयार हूँ॥
न किसी ·· ·······

मेरा रूप रंग बिगड़ गया।
मेरा यार मुझसे बिछड़ गया॥
जो चमन खिजां से उजड़गया।
मै उसकी फसले बहार हूँ॥
न किसी ···········

श्री राम बारह माह

चैत माह जन्म लियो राम रूप अवतार, दशरथ के घर बजी बधाई जगत भयो जय-जयकार।

माता कोशल्या लोरियां देंदी, देंदी दूध की धारा, सखियां रल मिल मंगल गांवदियां देखो रूप अवतार।

वैसाख माह रखो नाथ हमारे मै शरणागत तेरी दीन दयाल ने हाल जो कीना दे दिल लिख भरी।

खम्भ फाड़ कर हरनागस मार प्रहलाद दियो बचाय, तुम्हीं पाप हमारे हरण करो हे कृपाल ।।

जेठ जोर देखो आखरी गर्मी भारी यज्ञ सम्पूर्ण देखी के दुनियां प्रभु की रीत है न्यारा।

विश्वामित्र देखी साथ जो लीना जाई अहल्या तारी, जनक राज ने धनुष रखायो तहां की इच्छा धारी।

आषाढ़ मास हर को सिमरो वर जाई रावण के योधे आये देख मन चित लाई। राम रूप है अपरम्पारा गोविन्द गत नहीं पाई, धनुष तोड़ प्रभु हाथ जो लीना सीता मिली आई।।

सावन माह सीता सुहा जो पहना सुन्दर पीत पट धारे गले माला कण्ठ पर सोहे जोड़ी रूप अवतारो।

वर्षा देखो रूप-2 बरसे पंखा देत झुलारे राम रूप सो अर्ज हमारी पाप कटो दु:ख सारे।

भादो भगवती सिमरन कीजे प्रीत भक्त सुखदाई द्रोपदी की प्रभु लज्जा राखी ऐसे कृष्ण की चतुराई।

हाथी के फन्दन काटे क्षण में देर न लाई असौज माह लंका जो घेरी धनुष राम कर धारे।

राम नाम सब अपरम्पार लिख कर पर्वत तारे, राज विभीषण को दीना रावण को जब मारे।

कार्तिक माह प्रभु शरण लागो गोविन्द गीता सुमरन कर ले मुक्ति पदार्थ पायो।

पाप उवारे भार उतारे गंगा जा कर नहायो ।
मग्घर महीने वास जो लीना अयोध्या उपर मुरारी, भरत राम को बन्धन कीन प्रजा मिली है सारी ।
राज सिंहासन आसन कीना राज पट पर पधारे दु:ख सारे दूर जो कीने ऐसी अर्ज हमारी ।
पौष पहाड़े बर्फ जो बरसे ठण्ड लगे दु:खदाई, राम नाम अपरम्पारा लिख कर पर्वत तारे दु:ख टारे ।
पाप हमारे काटन लागे राम भक्ति जब पाई मै शरणागत तेरी दीनदयाल दीजे फन्द कटाई ।
रघुनाथ पिता हमारा जनक सुता है माता ।
माघ मकर हर वक्त जो कीनो प्रेम चित जो लाई, खोज-2 कर बैठे हृदय मेरे जो पाओ जिन चित लाओ ।
है नाथ तुम नाथ हमारा अब तो रूप दिखाओ, फागुन फाग ऐसा मजा खेलो ।
सीता संग सुहाई कुमकुम घोल के हाथ जो लेना छिड़कत रंग बानाई ।

बारह माह दूसरा

जेठ मास पिया परदेश सुधारे वरज रही पिया मनी न जा रे ।
तपत धरत मोरे पांव जलत अन्न धन्न प्रात: तजो छिन मोरे ।
हम को छोड़ चले बन माधो राधा सोच करे मन मोरे.............. हमको ।
आषाढ़ मास घिर आई बदरिया बिजली चमके श्याम मोरे रंग ना रे ।
चमक चमक चहुँ देश नी आवे, बिरह की आग लगो तन कारे ...... हमको ।
स्वामी तुमने छल क्यों कीनी प्रीत करी कुब्जा संग रे ।
तुम तो स्वामी मोरे जन्म के कपटी विरह आग लगी तन कोरे....... हमको ।
माधो भर निद्रा आवे पतियां लिखं घर आवन की रे ।
कोयल होके वन-वन ढूंढ भर गये वृन्दावन के रे.......... हमको ।
असौज मास निर्मल सजनी मेरा जिया चाहे गंगा नहाने को री.....हमको ।
कार्तिक मास रची है दिवाली दीपक जले सभी अंगना रे

हमरा दीपक जिन पर प्रभु हर लेना जाये बले कुब्जा अंगना रे·······माधो।
मग्घर मास एक वन-वन ढूंढू ढूंढू फिरी कजरी वन सारे।
ढूंढत ढूंडत कहीं भी पाये जाई को वरे धन वारे·······हमको।
पौष मास सर्दी लगी सखि मोरे तन को रे।
आवन कह गये अज भी नहीं आयो आस लगी प्यारे पिया की रे·····हमको।
माघ मास गड़े हिडोंले झूलन आई सभी सखियां रे प्यारे।
झूलत झूलत सखियां झुलाये गाय चले बारह माह रे···········हमको।
फागुन मास सभी रंग होरी रची कुब्जा अंगना रे।
हमारे तो रंग सभी झूठा विराजे रंग रंगे कुब्जा अंगना रे········हमको।
चैत मास चिता जो उपजे मेरा जिया चाहे गंगा नहाने को री।
वैसाख मास आस करत है कब घर आवत मोरे प्रीतम प्यारे।
सगरी रैन में तारे गिनदी विरह की आग लगी तन को री ····· हमको।

चौपाई : जन्म मरन सब दुःख सुख भोगा हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा,
काल कर्म बस दो ही गुसाई परवस राती दिवस की नाई।

सुख हर्षहिं जड़ दुःख विलखाही, दोऊ सम धीर धर ही मन माहीं।
धीरज धर्म विवेकु विचारी, छाड़ीये सोच सकल हितकारी।

दोहा : मांए गुणवन्त न जाणये, जाणियो भाग्यवन्त।
जो भाग्यवन्त के दरवाजे, खड़े रहत गुणवन्त ॥

(है जगत प्रभुनाथ)

अवगुण मोरे जान काऊ, दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ।
मै कदी कहो नियति अति भारी श्री रघुवीर धीर हितकारी।
मम हृदय भवन प्रभु तारो तन्द आई बसे बहु चोरा।

(श्री देवी गीता में श्री पूजा सारांश)

जो बाहरी दृष्य है वह भी मै हूँ। मुझ सुन्दर रूप को आभ्यन्तरी मन मन्दिर से मानसिक षोडशोपचार से पूजा करें। उसे मै अन्धकूप, अज्ञान से पार कर सायुज्य पद देती हूँ। चित के लीन को भीतरी पूजा कहते हैं। इस प्रकार मेरे सात्विक रूप में एकान्त भाव के अतिरिक्त अन्य जगत माया-मय मिथ्या है। भुवनेश्वरी का आवाहन करें, स्नान, वस्त्र, भूषण, सिन्दूर अक्षत, पुष्प, माला, सुन्दर सुगन्ध वाले पुष्प, ताम्बूल भोजन, दक्षिण जलपान, आरती, धूप, नृत्य, दण्डवत, अपनी देह भी उसी की है उसी को समर्पण करें। अभक्त और धूर्त को यह ज्ञान न दें।

साधक ब्रह्मरन्ध्र में प्रभात उठ कर नतमस्तक होकर सहस्त्र धार कमल का ध्यान करें। चैतन्य रूप में मग्न होकर ब्रह्मरन्ध्र से मूलाधार गमन करने के निमित्त आनन्दामृत है, जो इस प्रकार शुष्मना पथ में गमनशील है। पाद चरणों में श्री गणेश ब्रह्म, विद्या, शिव, रुद्र, ईश्वर यह पांच प्रेत कहलाते हैं। किन्तु शक्ति के बिना यह पांचों मेरे पाद मूल में स्थित हैं। पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इन पांच भूतों के और जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अतीत इन पांच अवस्थाओं के अधिपति हैं। पंच भूत तुरीय और अतीत अवस्था से से परे हैं।

ब्रह्मस्वरूपिणी हैं, इसी कारण मेरे आसन को प्राप्त हुये हैं। इस प्रकार शुक्रवार को षोडशोपचार से मानसिक पूजन करे। श्री माता के मुख्य प्रिय व्रतावतार भौमवार, शुक्रवार तृतीया चतुर्दशी कामाख्या आदि के प्रात:काल नाम लेने से सब मानव के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। बटुक कन्याओं में जो मेरे रूप का ध्यान करके पूजते हैं उन्हें मै सायुज्य भक्ति देती हूँ। पूजा चार प्रकार की कही गई है। बाह्य, आभ्यन्तरिक, तन्त्रोक्त, वेदोक्त, से पूजा करें।

वैदिक पूजा अनजाने न करें केवल ध्यान, स्मरण, दम्भ, अहंकार रहित होकर शान्ति पूर्वक करें।

पूजा कोटि समं स्त्रोत्रं, स्त्रोत्रं कोटि समं जपः।
जपं कोटि समं ध्यानं, ध्यानं कोटि समं तपः ॥

शीशा देखने से प्रतीत होता है कि इसमें भी शक्ति है, उसमें रूप प्रकाशित होता है। हमारा हृदय भी शीशे की तरह है, निर्मल शीशे में ही रूप दिखाई देता है मलिन में नहीं। कबीर जी कहते हैं कि "संसार में योगी से लेकर भोगी तक कोई भी सुखी नहीं। सुखी वही है जिसने अपने मन को जीत लिया है।

मानव सब कार्य भगवान के उपर छोड़ दे, मनुष्य सोचता कुछ और है लेकिन भगवान करता कुछ और है। उक्तं च—

सर्व धर्मान् परित्येज्य मामेकं शरणं व्रजः।
अहं त्वां सर्वपातेभ्यो मोक्षयिष्यामि, मा शुच ॥

भगवान का जो मनुष्य हर समय चिन्तन करता है, भगवान उसके हृदय में भ्रमण करते हैं।

ईश्वर सर्व भूतानां भ्रामयन् तिष्टत्यर्जुनः।

कटु वचन प्रहार के तुल्य हैं और मधुर वचन अमृत तुल्य है। एकान्त वास उत्तम है, बाहर ध्यन छुटे तो अन्दर ज्योति जगती है।

वृन्दावन की कुंजगलिन में रमी रहूँ भगवान ॥
मै हूँ तेरी, तेरी ही रहूँ भगवान ॥
सहारा दे किनारा दे मुझे सहारा तेरा भगवान।

मै हूँ तुम्हारी वृन्दावन बिहारी श्याम सदा रहूं तेरी ।।
लाज कलावती की तेरे हाथ मात पिता भ्रात जय-जय कुंजबिहारी

भजन

ये जिन्दगी के मेले दम का पता नहीं है हम जायेंगे अकेले ।
सब कुछ यहीं रहेगा हम जायेंगे अकेले ।।
दम भर में दमन होगा हम जायेंगे अकेले दुनियां यहीं रहेगी,
हम जायेंगे अकेले ।।

मनुष्य अपने पूर्व जन्म कृत कर्मो के अनुसार सुख दुःखों का भोग भोगता है।

श्लोक

पूर्व जन्म कृतं कर्म तदेव विनी कथ्यते ।
एवं पौरुष कारेण विना देवेन न सिध्यति ।।
आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
एतानि अपि सृज्यन्ते गर्भ तस्यैव देहिनाम ।।

मनुष्य स्वार्थ के लिये क्या कुछ नहीं करता, भौरों का पुष्पों से, पति का पत्नी से स्वार्थ का ही प्रेम होता है। वैश्या को भी जब पता चलता है कि मेरे पास आने वाले के पास पैसा नहीं है तो वह उसे भी छोड़ देती है। अध्ययन समाप्त करने पर शिष्य आचार्य को छोड़ देता है। जब वृक्ष पर फल नहीं रहते हैं तो पक्षी भी उस पेड़ को छोड़ देते हैं। आग लगने पर पशु भी वन को छोड़ देते हैं।

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसने च मूर्खाणां निन्दा कलहेन च ।।

यह हंसी, खुशी, रोना, एक दूसरे के बाद आते जाते रहते हैं। संसार की रचना भी एक नाटक की भान्ति हैं। जहां मोह है वहां द्वेष और रोष भी

होता है । परंच शुद्ध निस्काम जो हो वह प्रेम सदा रहता है वह भगवान को भी रचीयता है । सभी बातें अपने अनुकूल नहीं होती दूसरे प्रतिकूल अपने अनुकूल भो होती हैं ।

जब एकाग्र भाव नहीं मिलता तब मनुष्य राजसी, तामसी भाव वृति के जीवों की इच्छा रहती हैं । इच्छा पूर्ण न हो तो क्रोध उपजता हैं । यह इच्छा ही काम, क्रोध, लोभ, मोह रुप धारण करते हैं, इनको जीतकर ही सात्विक सत जीवन बनाकर सब दुःख दूर हो जाते हैं ।

भगवान को प्रसन्न करने वाले आठ पुष्प

अहिंसा प्रथमं पुष्पं, पुष्पमिन्द्रिय निग्रहस्य च ।
सर्व पुष्पं दयासुते पुष्प शान्तिविशिष्यते ।।
शमं पुष्पं, तपं पुष्पं, ध्यानं पुष्पं च सप्तमं ।
सत्य चत्राष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यन्ति केशवः ।।
एते रेवाष्टभिः पुष्पे स्तुष्यैवार्चितो हरि ।
पुष्पान्तराणि सन्त्यत्र वाह्यान्ति मनु जोतम ।। अग्नि पु.

(भागवत में गोपियों को श्री कृष्ण का आदेश)

श्री कृष्ण ने कहा कि मै सब का उपादान हूँ, कारण होने से सबका आत्मा हूँ । सब में अनुगत हूँ, इसलिये मुझसे कभी भी तुम्हारा वियोग नहीं हो सकता जैसे संसार में मौलिक पदार्थो में आकाश, वायु, जल, और पृथ्वी इन पांचों से ही सभी वस्तुयें बनीं हैं और मै ही उन वस्तुओं का रूप हूँ । मै ही अपनी माया, भूत, इन्द्रियां और उनका विषयों के रूप में आश्रय बन जाता हूँ । स्वय निमित बन कर अपने आप को रचता हूँ, पालता हूँ । माया की तीन वृतियां हैं : सुषुप्ति, स्वप्न, और जाग्रत, इनके द्वारा वहि-अखण्ड अनन्त बोध स्वरूप आत्मा का भी प्राज्ञ तो कभी तैजस और कभी विश्व रूप से प्रतीत होता है । मनुष्य को चाहिये कि वह स्वप्न दिखाने वाले

मै हूँ तुम्हारी वृन्दावन बिहारी श्याम सदा रहूं तेरी ॥
लाज कलावती की तेरे हाथ मात पिता भ्रात जय-जय कुंजबिहारी

भजन

ये जिन्दगी के मेले दम का पता नहीं है हम जायेंगे अकेले ।
सब कुछ यहीं रहेगा हम जायेंगे अकेले ॥
दम भर में दमन होगा हम जायेंगे अकेले दुनियां यहीं रहेगी,
हम जायेंगे अकेले ॥

मनुष्य अपने पूर्व जन्म कृत कर्मो के अनुसार सुख दुःखों का भोग भोगता है।

श्लोक

पूर्व जन्म कृतं कर्म तदेव विनी कथ्यते ।
एवं पौरुष कारेण विना देवेन न सिध्यति ॥
आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
एतानि अपि सृज्यन्ते गर्भ तस्यैव देहिनाम ॥

मनुष्य स्वार्थ के लिये क्या कुछ नहीं करता, भौरों का पुष्पों से, पति का पत्नी से स्वार्थ का ही प्रेम होता है। वैश्या को भी जब पता चलता है कि मेरे पास आने वाले के पास पैसा नहीं है तो वह उसे भी छोड़ देती है। अध्ययन समाप्त करने पर शिष्य आचार्य को छोड़ देता है। जब बृक्ष पर फल नहीं रहते हैं तो पक्षी भी उस पेड़ को छोड़ देते हैं। आग लगने पर पशु भी वन को छोड़ देते हैं।

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसने च मूर्खाणां निन्दा कलहेन च ॥

यह हंसी, खुशी, रोना, एक दूसरे के बाद आते जाते रहते हैं। संसार की रचना भी एक नाटक की भान्ति है। जहां मोह है वहां द्वेष और रोष भी

होता है । परंच शुद्ध निस्काम जो हो वह प्रेम सदा रहता है वह भगवान को भी रचीयता है । सभी बातें अपने अनुकूल नहीं होती दूसरे प्रतिकूल अपने अनुकूल भो होती हैं ।

जब एकाग्र भाव नहीं मिलता तब मनुष्य राजसी, तामसी भाव वृति के जीवों की इच्छा रहती हैं । इच्छा पूर्ण न हो तो क्रोध उपजता हैं । यह इच्छा ही काम, क्रोध, लोभ, मोह रुप धारण करते हैं, इनको जीतकर ही सात्त्विक सत जीवन बनाकर सब दुःख दूर हो जाते हैं ।

भगवान को प्रसन्न करने वाले आठ पुष्प

अहिंसा प्रथमं पुष्पं, पुष्पमिन्द्रिय निग्रहस्य च ।
सर्व पुष्पं दयाभुते पुष्प शान्तिविशिष्यते ।।
शमं पुष्पं, तपं पुष्पं, ध्यानं पुष्पं च सप्तमं ।
सत्य चवाष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यन्ति केशव: ।।
एते रेवाष्टभि: पुष्पे स्तुष्यैवार्चितो हरि ।
पुष्पान्तराणि सन्त्यत्र बाह्यन्ति मनु जोतम ।। अग्नि पु.

(भागवत में गोपियों को श्री कृष्ण का आदेश)

श्री कृष्ण ने कहा कि मै सब का उपादान हूँ, कारण होने से सबका आत्मा हैं । सब में अनुगत हूँ, इसलिये मुझसे कभी भी तुम्हारा वियोग नहीं हो सकता जैसे संसार में मौलिक पदार्थो में आकाश, वायु, जल, और पृथ्वी इन पांचों से ही सभी वस्तुयें बनीं हैं और मै ही उन वस्तुओं का रूप हूँ । मै ही अपनी माया, भून, इन्द्रियां और उनका विषयों के रूप में आश्रय बन जाता हूँ । स्वय निमित बन कर अपने आप को रचता हूँ, पालता हूँ । माया की तीन वृतियां हैं : सुषुप्ति, स्वप्न, और जाग्रत, इनके द्वारा वहि-अखण्ड अनन्त बोध स्वरूप आत्मा का भी प्राज्ञ तो कभी तैजस और कभी विश्व रूप से प्रतीत होता है । मनुष्य को चाहिये कि वह स्वप्न दिखाने वाले

पदार्थों के समान ही जागृतावस्था में इन्द्रियो के विषय में प्रतीत हो रहे हैं। इसलिये उन विषयों को त्याग कर मेरा साक्षात करो। हे गोपियो ! मै तुम्हारे नयनों का ध्रुवतारा हूँ। मै मथुरा में तुमसे दूर इसलिये रहता हूँ, ताकि तुम मेरा निरन्तर ध्यान कर सको, शरीर से दूर रहने पर भी मन से मेरा सानिध्य प्राप्त कर सको।

(कलि महत्व)

कलौ दोषे निधे राजन् श्रियेको महान गुणान् कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगं परं भजेत।
कृते यद् ध्यायते विष्णो: त्रेतायां यजतो मुखे द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि कीर्तनात् ॥
भावार्थ : हे राजन परीक्षित इन दोषों के भण्डार का कलियुग में एक बड़ा भारी गुण है। वह यह कि मनुष्य भगवान नाम के कीर्तन से ही सब प्रकार के कुसंग से छुटकारा पाकर परम पद को प्राप्त करता है। सतयुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञों द्वारा द्वापर में हरि नाम लेने से उसी की कलियुग में हरि नाम लेने से ही मुक्ति हो जाती है।

शास्त्र वाक्य

(आत्मा वै जायते पुत्र:) पिता की आत्मा ही पुत्र के रूप में आती है। जैसे सन्त लोग ही भगवान के रूप में हमारे उद्धार के लिये होते हैं, ऐसे ही गुरू के रूप में शिष्य आता है।

(भक्तों का महत्व)

भक्तों को भगवान ने अपने से भी बड़ा बताया है।

भक्त बढ़ो भगवान से चारों युग परभान सेतु बान्धी रघुवर गये कूद गये हनुमान ।

अन्दर के चक्षु देखते हैं तो बाहर भी भगवान ही दीखते हैं । इस पार्थिव शरीर की भला कीमत ही क्या हैं इसे न जाने हमने कितनी बार त्यागा और कितनी बार ग्रहण किया है । इसलिये भक्ति में ही जीवन सफल है ।

दोहा :— प्रभु भक्ति में दर्शन प्रेम शरीर छूटे तो छूटे ।
हरि मिले पुनि आन न जाने कछु देर में गाहक आवे और ।।

(अनुभव)

विघ्नों द्वारा ही साधक अपनी गलतियों को समझता है । उसका शान्ति पूर्वक सामना करने से ही उसकी साधना में दृढ़ता आती है । आज तक जितने अवतार हुये हैं, उनकी विघ्न बाधाओं को हटाने में ही प्रतिष्ठा हुई है । जो साधक अपने बिरोधी के बिरोध करने से अपनी शक्ति क्षीण नहीं करता, उसे उसकी अपेक्षा तत्परता पूर्वक अपने ईष्ट साधन में लगे रहना चाहिए । ईष्ट साधन उसके विघ्न बाधाओं से स्वत: ही हट जाते हैं ।

राम कृष्ण परम हंस कहते हैं कि मनुष्य योगी का कितना ही बाहरी रूप बनाये पत्नं च उसमें वासना और तृष्णा रहे तो वह मुक्त नहीं हो सकता जैसा गिद्ध उड़ता आकाश में है परंच उसकी दृष्टि मांस पर ही रहती है ।

पतित होकर भी हम पतित पावन के पास जा सकते हैं, दीन होकर भी दीन बन्धु के पास जा सकते हैं । किसो पर हम दोषारोपण न करें, सब रूपों में हमारा ईष्ट हो लोला कर रहा है । राग द्वेष किसी से न करें, इस परमार्थ कांटे और शत्रु है । एकान्त वास में रह कर मनुष्य अभिमान से बचे रहते हैं ।

अब मै ईष्ट गुरू को प्रणाम करके इस कला की इति श्री करती हूँ । त्रुटियों को विद्वान पाठक क्षमा करेंगे और उन्हें सुधारने की कृपा करगे ।

(लेखिका का स्थानादि परिचय)

कोटि अणु अम्बापुर जन्म सुता गुमान हो ज्ञान ।
निश दिन ध्याऊं अम्बकु "कलावती" मम नाम ।
नृपति लक्ष्मण सैन पतिदेव सुख राज ।
तिनकी कृपा से शुकपुर में करूं निवास ।
शोभामय शुभ भवनों में निज पति के अनुसार ।
श्री लक्ष्मण कला विनोद नाम लिखुँ पीछे कला निहार ॥
श्री लक्ष्मण कला ज्ञान को प्रेम से पढ़ जो मन चित लाय ।
प्रकाश ज्ञान का होत है, जन्म सफल हो जाय ।

देश हितैक्षिणी
कलावती, सुकेत, (हि० प्र०)





मेरे ज्येष्ठ सुपुत्र ललित सेन,

जिनसे मुझे इस कृति को [illegible] करने की प्रेरणा मिली।